2

शिक्षा की नींव — सीखने के कौशल और प्रतिफल की समझ

पद्मा यादव*

बचपन व्यक्ति के संपूर्ण विकास की आधारशिला है। यह वह समय होता है जब बच्चे अपने परिवेश से सीखते हैं, भाषा को समझते हैं, सामाजिक व्यवहार अपनाते हैं और विभिन्न कौशलों का निर्माण करते हैं। शिक्षा के इस बुनियादी स्तर पर बच्चों के सीखने के कौशल और उनसे प्राप्त प्रतिफलों को समझना, शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। बुनियादी स्तर की शिक्षा से तात्पर्य उन प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा से है, जो पूर्व-प्राथमिक (3–6 वर्ष) और प्राथमिक (कक्षा 1–2 तक) स्तर तक फैली होती है। इसे ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने 'बुनियादी स्तर' कहा है। इस चरण में बच्चों का सीखना — अनुभवों, गतिविधियों और खेलों के माध्यम से होता है। सीखने के कौशल बच्चों को शिक्षा और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार करते हैं, जबकि सीखने के प्रतिफल यह दिखाते हैं कि बच्चों ने उन कौशलों को किस हद तक हासिल किया है और वे जीवन में उसे कैसे प्रयोग करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को जीवन में उपयोगी और व्यावहारिक कौशल भी प्रदान करना है। सीखने के कौशल विकसित करने और सीखने के प्रतिफल जाँचते रहने से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि बच्चे सफलता पूर्वक ज्ञान अर्जित कर रहे हैं और यदि कहीं कठिनाई महसूस होती है, तो उसे दूर किया जा सकता है। यह लेख इन्हीं पहलुओं पर केंद्रित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाना है, जो सभी के लिए सुलभ, लचीली और जीवन से जुड़ी हो। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा में कई सुधार किए गए हैं। ये सुधार एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों के अनुसार ही हैं। इनका मुख्य उद्देश्य है — शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना, बच्चों के सीखने के अनुभव को और रोचक बनाना और

*प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

उन्हें 21वीं सदी के जरूरी कौशलों से तैयार करना। नीति में यह भी कहा गया है कि बच्चों के लिए पढ़ाई को आसान, मजेदार और उपयोगी बनाया जाए। केवल पढ़ना-लिखना और गिनती ही नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और रचनात्मक क्षमताओं को भी विकसित किया जाए।

सीखने के कौशल क्या हैं?

सीखने के कौशल वे क्षमताएँ हैं, जो बच्चों को जानकारी ग्रहण करने, उसे समझने, उपयोग करने और नई स्थितियों में लागू करने में सहायक होती हैं, जैसे — संज्ञानात्मक कौशल (ध्यान, स्मरण, समस्या-समाधान, तर्कशक्ति, वर्गीकरण और निर्णय लेने से संबंधित क्षमताएँ), भाषायी कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना — यह बच्चों के संप्रेषण व अभिव्यक्ति के आधार बनते हैं), संख्यात्मक कौशल (संख्या की पहचान, गिनती, जोड़-घटाव जैसी बुनियादी गणितीय क्षमताएँ), सामाजिक-भावनात्मक कौशल (दूसरों के साथ सहयोग करना, भावनाओं को समझना और व्यक्त करना, आत्म-नियंत्रण रखना आदि), शारीरिक और गत्यात्मक कौशल (जैसे — दौड़ना, कूदना और सूक्ष्म कौशल जैसे लिखना, काटना, पेस्टिंग करना)।

सीखने के कौशलों का विकास ही बच्चों को प्रतिफल प्राप्त करने योग्य बनाता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चा सुनने और समझने की क्षमता विकसित करता है, तो वह निर्देशों का पालन कर सकता है जो कि एक प्रतिफल है। कौशल और प्रतिफल दोनों ही आपस में पूरक हैं। कौशल का अर्थ है किसी कार्य या गतिविधि को प्रभावी ढंग से करने की क्षमता। यह एक व्यक्तिगत क्षमता होती है, जिसे अभ्यास, अनुभव और प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

सीखने के प्रतिफल क्या हैं?

सीखने के प्रतिफल वह उद्देश्य या परिणाम होते हैं, जो शैक्षिक कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों या पाठों से प्राप्त होते हैं। यह वह परिवर्तन है, जो विद्यार्थी ने शिक्षा के दौरान हासिल किया है, जैसे कि ज्ञान, समझ और कौशल में वृद्धि। सीखने के प्रतिफल यह बताते हैं कि विद्यार्थी ने क्या सीखा, उसकी क्या क्षमता बढ़ी और वह किसी विषय को किस स्तर तक समझता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी को गणित में समस्या हल करने की क्षमता, किसी घटना का विश्लेषण करने की क्षमता, या पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता आदि।

कौशल किसी कार्य को करने की क्षमता है, जबकि सीखने के प्रतिफल यह बताते हैं कि शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थी ने क्या नया सीखा या किस क्षेत्र में उसे दक्षता प्राप्त हुई। कौशल एक भाग है, जो सीखने के प्रतिफल में शामिल हो सकता है। सीखने के प्रतिफल वे अपेक्षित व्यवहार या उपलब्धियाँ होती हैं जिन्हें एक निश्चित समयावधि के अंत में बच्चों में देखा जा सकता है, जैसे — बच्चा 1–20 तक संख्याएँ पहचान सकता है। बच्चा चित्र देखकर कहानी सुना सकता है।

'सीखने के कौशल' और 'सीखने के प्रतिफल' के बीच का अंतर

सीखने के कौशल	सीखने के प्रतिफल
वे क्षमताएँ और योग्यता जिनसे बच्चे सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं।	वे विशिष्ट उपलब्धियाँ जो बच्चे सीखने के बाद प्रदर्शित करते हैं।
प्रक्रिया-आधारित	परिणाम-आधारित
ध्यान केंद्रित करना, समस्या सुलझाना, सहयोग करना, संप्रेषण करना	एक कहानी को समझकर उसका सारांश बता पाना, 10 तक गिनती कर पाना
बच्चे में सीखने की योग्यता और रुचि विकसित करना	यह जानना कि बच्चे ने क्या सीखा और वह उसे कैसे प्रयोग कर रहा है
प्रक्रिया में भागीदारी, प्रयास और कौशल का प्रयोग	व्यवहार में आए बदलाव या प्रदर्शन द्वारा आँका जाता है

'सीखने के कौशल' और 'सीखने के प्रतिफल' के बीच का आपसी संबंध

सीखने के कौशल बच्चे को सीखने के प्रतिफल तक पहुँचने में मदद करते हैं। कौशल और प्रतिफल एक-दूसरे के पूरक होते हैं। जब बच्चा सीखने के कौशल का सही तरीके से प्रयोग करता है, तब उसे विशिष्ट प्रतिफल प्राप्त होते हैं, जैसे एक विषय में दक्षता या किसी समस्या को सुलझाने की क्षमता। सीखने के कौशल का लगातार अभ्यास बच्चों को सीखने के प्रतिफल की दिशा में प्रगति करने में मदद करता है।

बच्चों के सीखने और समझने की क्षमता तथा कौशल विकास को जाँचने के लिए आकलन

आकलन को शैक्षिक अभ्यासों का एक अभिन्न हिस्सा माना गया है और विद्यालय में बच्चों की समझ और विकास का आकलन निरंतर किया जाना चाहिए। बच्चों के सीखने को समझने के लिए सतत और व्यापक आकलन का उपयोग किया जाता है। आकलन, सभी बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक अग्रणी दक्षताओं की प्राप्ति पर आधारित होना चाहिए। इसे खेलों और अन्य गतिविधियों के माध्यम से अनौपचारिक रूप से निरंतर एवं व्यवस्थित भागीदारी द्वारा किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए कि शैक्षिक वर्ष के अंत तक बच्चों द्वारा आयु-उपयुक्त अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त कर लिए जाएँ। पाठ्यक्रम के संचालन के दौरान प्रदान किए गए अनुभवों का ही मूल्यांकन किया जाना चाहिए। आकलन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छोटे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को समझने, उनका मार्गदर्शन करने, और शिक्षा को उनके अनुकूल बनाने में मदद करता है। इसमें बच्चों के व्यवहार, सहभागिता, रचनात्मकता और कौशलों का अवलोकन शामिल होता है। बच्चों के सीखने को समझने के लिए बाल केंद्रित मूल्यांकन विधियाँ, जैसे—पोर्टफोलियो, चेकलिस्ट, ऑब्जर्वेशन, खेल आधारित मूल्यांकन का उपयोग किया जाना चाहिए।

कौशल विकास में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक ही वह मार्गदर्शक होते हैं, जो बच्चों के कौशल विकास में मदद करते हैं। वे बच्चों के भविष्य को संवारने के लिए जिम्मेदार होते हैं। बुनियादी स्तर पर बच्चे को एक ऐसे शिक्षक और देखभाल करने वाले की आवश्यकता होती है, जिसके पास छोटे बच्चों को संभालने की संवेदनशीलता, समझ और आवश्यक कौशल हों और जो बच्चों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कर सके।

एक अच्छे शिक्षक की निम्न विशेषताएँ होतीं हैं—

- योग्यता, ज्ञान और कौशल से सुसज्जित होना
- सीखने के लिए तैयार रहना और खुले विचारों से नई चीजों व विचारों को स्वीकार करना
- बच्चों के स्तर को समझकर उनके साथ सार्थक रूप से संवाद और बातचीत करना
- अच्छी समझ के साथ सुखद, ऊर्जावान और नवाचारी होना
- धैर्यवान और भावनात्मक रूप से स्थिर होना
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने के प्रति संवेदनशील होना
- उत्साही और दयालु होना
- अच्छा श्रोता होना, विनम्रता से बोलना और उचित भाषा का प्रयोग करना
- बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ को स्वीकार करना और उसकी सराहना करना
- उपलब्ध संसाधनों में रचनात्मकता और प्रस्तुति कौशल का प्रयोग करने में सक्षम होना

अच्छे शिक्षक प्रतिफल आधारित योजनाएँ बनाकर गतिविधियों को ऐसा रूप देते हैं कि बच्चे आनंदपूर्वक सीखें। एक संवेदनशील शिक्षक हर बच्चे की सीखने की गति को समझकर उसे अवसर प्रदान करता है। बुनियादी शिक्षा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चे कितने सहज, आनंददायक और अनुभवात्मक तरीके से सीख पा रहे हैं। कौशलों का विकास और प्रतिफल की प्राप्ति न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं, बल्कि हर बच्चे के समग्र विकास में योगदान देते हैं। चूँकि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि बच्चों को जीवन के लिए तैयार करना है और इसकी नींव बुनियादी स्तर पर ही रखी जाती है, इसलिए प्रारंभिक वर्षों में गुणवत्तापूर्ण और समग्र शिक्षा का प्रदान किया जाना अत्यंत आवश्यक है ताकि बच्चे भविष्य की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ कर सकें। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में सीखने के कौशल और प्रतिफलों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, ताकि शिक्षण का उद्देश्य स्पष्ट हों।

बुनियादी स्तर के शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम के लक्ष्य

पाठ्यचर्या के लक्ष्यों से बच्चे के ज्ञान और कौशल के निर्माण हेतु बुनियादी स्तर की गतिविधियों का मार्गदर्शन होता है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुसार, बुनियादी स्तर के लिए 13 पाठ्यक्रम लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 की नींव पंचकोषीय विकास की भारतीय अवधारणा पर आधारित है। पंचकोषीय विकास की अवधारणा भारतीय दर्शन, विशेषकर तैत्तिरीय उपनिषद से ली गई है। यह विकास मानव के पाँच आवरणों — अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोष के संतुलित और समग्र विकास की बात करता है। इसका उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण व्यक्ति का निर्माण करना है।

प्रक्षेत्र	पाठ्यक्रम लक्ष्य
अन्नमय और प्राणमय कोश (शारीरिक और गत्यात्मक विकास)	सी.जी. 1 — बच्चों में ऐसी आदतों का विकास करना, जो उन्हें स्वच्छ और सुरक्षित बनाए रखें, जैसे — व्यक्तिगत स्वच्छता, साफ-सफाई, सुरक्षित व्यवहार (जैसे सड़क पर सावधानी) और आत्म-देखभाल की आदतें। सी.जी. 2 — बच्चों में संवेदी कुशाग्रता का विकास करना, जैसे — सुनना, देखना, छूकर पहचानना, स्वाद लेना और सूंघने की क्षमता को बेहतर बनाना। सी.जी. 3 — बच्चों में स्वस्थ शरीर और लचीलेपन का विकास करना, जैसे — शारीरिक व्यायाम, स्ट्रेचिंग, दौड़ना, कूदना, संतुलन बनाए रखना आदि।
मनोमय कोष (सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास)	सी.जी. 4 — बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास करना, ताकि वे अपनी भावनाओं को पहचान सकें, उन्हें सकारात्मक रूप से नियंत्रित कर सकें तथा दूसरों की भावनाओं को समझते हुए सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त एवं संवेदनशील प्रतिक्रिया दे सकें। सी.जी. 5 — बच्चों में श्रम की गरिमा को समझते हुए उत्पादक कार्यों, सेवाओं और सहयोग की भावना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना, जिससे वे सामूहिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करना सीखें। सी.जी. 6 — बच्चों में अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति जिज्ञासा, सराहना और संरक्षण की भावना उत्पन्न करना, ताकि वे प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बना सकें और पर्यावरण की देखभाल के लिए प्रेरित हो सकें।
विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास)	सी.जी. 7 — बच्चों में अवलोकन, जिज्ञासा, प्रश्न पूछने और तार्किक सोचने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना, ताकि वे अपने आस-पास की दुनिया को समझ सकें, उससे संबंध स्थापित कर सकें और रोजमर्रा के अनुभवों से ज्ञान अर्जित कर सकें। सी.जी. 8 — बच्चों में प्रारंभिक गणितीय अवधारणाओं, जैसे — मात्रा, आकार, पैटर्न और मापन की समझ विकसित करना, ताकि वे इनका उपयोग दैनिक जीवन की गतिविधियों में कर सकें और समस्याओं को हल करने की दिशा में सोच सकें।
विज्ञानमय कोष (भाषा और साक्षरता का विकास)	सी.जी. 9 — बच्चों में दैनिक जीवन की अंतःक्रियाओं के लिए दोनों भाषाओं (जैसे — मातृभाषा और संपर्क भाषा) में प्रभावी रूप से बोलने, सुनने, समझने और प्रतिक्रिया देने की संप्रेषणीय क्षमताओं का विकास करना। सी.जी. 10 — बच्चों में भाषा 1 (एल 1) में पढ़ने और लिखने के कौशल को इस प्रकार विकसित करना कि वे सरल पाठों को समझकर प्रवाहपूर्ण रूप से पढ़ सकें और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से लिख सकें। सी.जी. 11 — बच्चों को भाषा 2 (एल 2) की मौलिक समझ प्रदान करना और प्रारंभिक स्तर पर पढ़ने व लिखने की शुरुआत कराना, ताकि वे दूसरी भाषा से भी धीरे-धीरे जुड़ सकें और उसका उपयोग करने में सहज हों।
आनंदमय कोष (सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास)	सी.जी. 12 — बच्चों में दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं के प्रति रुचि, संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति की क्षमताओं का विकास करना, ताकि वे कला के विभिन्न रूपों (जैसे — चित्रकला, संगीत, नृत्य, नाट्य आदि) के माध्यम से अपनी भावनाओं, अनुभवों और विचारों को अर्थपूर्ण एवं आनंददायक तरीकों से व्यक्त कर सकें।
उपरोक्त पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्यों के अतिरिक्त, सीखने की सकारात्मक आदतें भी एक अन्य समग्र एवं महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में सम्मिलित हैं।	

सीखने की सकारात्मक आदतें	सी.जी. 13 — बच्चों में औपचारिक शिक्षण वातावरण, जैसे विद्यालय और कक्षा में, सहभागिता हेतु उपयुक्त व्यवहार, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, कार्य को पूरा करने की निरंतरता, सुनने और निर्देशों का पालन करने जैसी अच्छी सीखने की आदतों का विकास करना, ताकि वे विद्यालयी जीवन के लिए सहज रूप से तैयार हो सकें।

अन्नमय और प्राणमय कोश (शारीरिक और गत्यात्मक विकास) को विकसित करने वाली दक्षताओं में शामिल हैं

- निर्णय लेना और समस्या समाधान की क्षमता
- स्वस्थ आदतों, साफ-सफाई और आत्म-सुरक्षा के लिए स्वच्छता एवं जागरूकता का विकास
- स्वाद, गंध, दृष्टि, श्रवण और स्पर्श के लिए संवेदी विकास के अवसर
- स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास, जैसे —
  - चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना
  - रेंगना, चढ़ना, लयबद्ध गति
  - फेंकना, पकड़ना, पैर से मारना
- स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार की मांसपेशियों को मजबूत करने तथा नेत्र-हस्त समन्वय को विकसित करने के लिए बारीक गत्यात्मक कौशल का अभ्यास, जैसे —
  - थ्रेडिंग (सूत्र में पिरोना), फाड़ना, चिपकाना
  - लिखना, खींचना, रंगना, छपाई
  - मोल्डिंग (आकार देना), कागज मोड़ना आदि

मनोमय कोष (सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास) से जुड़ी प्रमुख दक्षताएँ

- स्वयं एवं दूसरों के प्रति जागरूकता
- सकारात्मक आत्म-संकल्पना का विकास
- आत्म-नियमन की क्षमता
- समाजसम्मत व्यवहार का विकास, जैसे —
  - दूसरों का ध्यान रखना, साझा करना, सहयोग, करुणा
  - दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का सम्मान
- अच्छी आदतों का विकास, पहल करना और गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी
- सुरक्षा और विश्वास की भावना का निर्माण
- सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीके अपनाना, जिज्ञासा, स्वतंत्रता और नेतृत्व
- दूसरों के व्यवहार व भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता
- बुजुर्गों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों तथा दिव्यांगजनों के प्रति सहानुभूति और मानवीय दृष्टिकोण
- कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की भावना
- अच्छा इंसान और देश का जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए
  - पर्यावरण, पेड़-पौधों, जानवरों, पक्षियों आदि की देखभाल और संरक्षण का व्यवहार

विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास और भाषा और साक्षरता का विकास) को विकसित करने की दक्षताएँ निम्नलिखित हैं

संवेदी विकास (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध, स्वाद)

संज्ञानात्मक कौशल (अवलोकन, पहचान, स्मृति,

मिलान के पैटर्न, वर्गीकरण, अनुक्रमिक सोच, अविष्कार, जिज्ञासा, समीक्षात्मक सोच, समस्या समाधान, तर्क, प्रयोग, रचनात्मक सोच

संकल्पना निर्माण

- रंग की संकल्पना
- आकृतियों की संकल्पना
- पूर्व-संख्या संकल्पनाएँ
- आकार की संकल्पना (बड़ा/छोटा)
- लंबाई की संकल्पना (लंबी/छोटी)
- वजन की संकल्पना (भारी/हल्का)
- मोटाई की संकल्पना (मोटी/पतली)
- चौड़ाई की संकल्पना (चौड़ा/संकरा)
- द्रव्यमान/मात्रा की संकल्पना
- दूरी की संकल्पना (दूर/निकट)
- स्थान की संकल्पना, समय की संकल्पना
- तापमान की संकल्पना

पर्यावरण से संबंधित संकल्पनाएँ

- जैविक (पशु, फल, सब्जियाँ, भोजन)
- भौतिक (जल, वायु, ऋतु, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात)
- सामाजिक (स्वयं, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक सहायक आदि)

गणितीय कौशल (संख्या बोध का विकास)

- एक का एक से संबंध
- संख्या-वस्तु संबंध
- गिनती और बताना कि कितने हैं
- अंकों की पहचान करना
- कही गई बात को समझना (20 तक की संख्या का गिनना)

भाषा और साक्षरता कौशल

बात करना और सुनना

- ध्यान से सुनना
- रचनात्मक अभिव्यक्ति और बातचीत
- भाषा और रचनात्मक सोच
- शब्दकोष का विकास

आकर्षक पठन

- प्रिंट की जागरूकता और अर्थ निकालना
- किताबों से जुड़ाव
- दिशामुक्तता
- पढ़ने का अभिनय करना
- श्रवण के प्रति सजगता

आनंदमय कोष को विकसित करने की दक्षताएँ

- कला और शिल्प के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास, जैसे —
  - लयात्मक गति, भूमिका-निर्वहन, नाट्यात्मकता, संगीत और गत्यात्मकता
- पर्यावरण में रंगों और सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता का विकास
- सुंदरता की सराहना, आनंद और आत्म-संतुलन के लिए रचनात्मक सोच का विकास, जैसे —
  - खुले उत्तर वाले प्रश्न, कल्पनाशील अभिव्यक्ति, रचनात्मक तुकबंदी, कहानियाँ
  - प्रकृति की सैर, कक्षा में प्रदर्शन आदि

सीखने की सकारात्मक आदतों को विकसित करने की दक्षताएँ

- नियमित उपस्थिति बनाए रखना
- समय की पाबंदी करना
- कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना और सहभागिता करना
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना
- दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना
- दूसरों की बात ध्यानपूर्वक सुनना
- दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करना
- नेतृत्व करना
- कार्य पर अडिग रहना और समय पर कार्य को पूरा करना
- 'सीखने के लिए सीखना' जैसी आदतों का विकास करना

सीखने के प्रतिफल

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में 3–8 आयु-वर्ग के लिए सीखने के प्रतिफल दिए गए हैं। इनसे पता चलता है कि विद्यार्थियों ने एक साल में अपनी विद्यालयी शिक्षा (बलवाटिका 1, 2, 3 या कक्षा 1, 2) में क्या हासिल किया और उनमें किस तरह की समझ और कौशल विकसित हुए। सीखने के प्रतिफल शैक्षिक प्रक्रिया के अंतर्गत विद्यार्थियों की क्षमताओं और उपलब्धियों का आकलन करने का एक तरीका है। जैसे यदि आप देखें तो कुछ समय बाद अभ्यास या शिक्षक द्वारा आयोगित गतिविधियों के माध्यम से- बच्चे अपने शारीरिक कौशल में सुधार करते हैं जैसे चलना, दौड़ना, कूदना और अन्य गत्यात्मक कौशल। संवेदी विकास में वृद्धि दिखती है, जिसमें दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध और स्वाद का बेहतर अनुभव होता है। बच्चे सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल (जैसे — लिखना, काटना, रंगना) और शारीरिक कौशल (जैसे — दौड़ना, कूदना) में भी सुधार दिखाते हैं। बच्चे दूसरों के साथ संवाद करते हुए और उनका सम्मान करते हुए सामूहिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। बच्चों में आत्म-नियंत्रण और अपने भावनाओं को समझने की क्षमता विकसित होती है। वे अन्य बच्चों के साथ सहयोग करते हुए, साझा करते हुए और सहानुभूति दिखाते हुए सामाजिक संबंधों में सुधार करते हैं। बच्चे भाषायी कौशल में वृद्धि दिखाते हैं, जैसे बोलने, सुनने और समझने में सुधार। उनका शब्दकोश बढ़ता है और वे अपने विचारों और विचारधाराओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। पठन और लेखन में बुनियादी कौशल का विकास होता है। बच्चे सांस्कृतिक विविधताओं को समझते हैं और विभिन्न समुदायों, पर्यावरण और समाज के बारे में जानने की इच्छा दिखाते हैं। वे नैतिक मूल्यों जैसे कि ईमानदारी, जिम्मेदारी और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना सीखते हैं। बच्चे कला, संगीत, नृत्य और खेलकूद में अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं। वे कल्पनाशील खेलों में भाग लेते हैं, जो उनके सोचने और सृजनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। इन प्रतिफलों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने से शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि बच्चों ने क्या सीखा है और कहाँ सुधार की आवश्यकता हो सकती है। यह शिक्षण और आकलन के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर(एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 की शिक्षा को समग्र, समावेशी और बाल-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ नया रूप देने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। सीखने के प्रतिफलों की स्पष्ट पहचान और उनके अनुरूप शिक्षण-अधिगम के अनुभवों की योजना, बच्चों में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के साथ-साथ समझ, सोचने की क्षमता, भावनात्मक सामाजिक विकास और जीवन कौशल को भी विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। बच्चों की विविधता, सीखने की गति, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए प्रतिफल, न केवल शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार लाते हैं, बल्कि आकलन और शिक्षक प्रशिक्षण की प्रक्रियाओं को भी अधिक उद्देश्यपरक और प्रभावी बनाते हैं। इस प्रकार, यदि शिक्षक, नीति-निर्माता और सभी सम्बद्ध पक्ष मिलकर समर्पण भाव से कार्य करें, तो यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि प्रत्येक बालक की सीखने की यात्रा सार्थक, आनंददायक और जीवनोपयोगी हो।

संदर्भ

कौल, वी. 2002. *बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति (ई.सी.सी.ई.)*. महिला और बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2017. *सीखने के प्रतिफल — प्राथमिक स्तर. 2022.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/tilops2017.pdf

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncf.ncert.gov.in

———. 2023. *बुनियादी स्तर के लिए जादुई पिटारा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/jadui-pitara.php

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/एन.ई.पी._Final_English_0.pdf